जूनिपर (शुक्पा) की नर्सरी तकनीक एवं समशीतोष्ण ऊंचाई क्षेत्र वाले औषधीय पौधों की खेती" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम की रिपोर्ट

Report on Training Programme on Nursery Technique of Juniper and Cultivation of Temperate Medicinal Plants

(At Kaza on 20.06.22023)

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा "जूनिपर (शुक्पा) की नर्सरी तकनीक एवं समशीतोष्ण ऊंचाई क्षेत्र वाले औषधीय पौधों की खेती" विषय पर काजा लाहौल स्पीति में 20 जून 2023 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया । डॉ॰ जगदीश सिंह, प्रभाग प्रमुख विस्तार ने मुख्य अतिथि, श्री अरुण सिंह रावत, महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान शिक्षा परिषद, देहारादून, सम्मानीय अतिथि श्री राहुल जैन, भारतीय प्रशासनिक सेवा, एडीसी काजा, सम्मानीय अतिथि श्री हर्ष नेगी, एसडीएम काजा, डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला एवं प्रशिक्षण प्रतिभागियों का स्वागत किया और प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा के बारे में बताया । संस्थान के निदेशक द्वारा मुख्य और सम्माननीय अतिथियों का हिमाचली परंपरा के अनुसार टोपी और खतक भेंट कर स्वागत किया गया । महानिदेशक ने डीसी, काजा एवं एसडीएम, काजा को शुक्पा के 10 पौधे भेंट किए और स्थानीय लोगों को आश्वासन दिया कि संस्थान भविष्य में भी शुक्पा के पौधे समय-समय पर स्थानीय लोगों को वितरित करता रहेगा । इसके अलावा उन्होंने उम्मीद जताई कि प्रशिक्षण कार्यक्रम के उपरांत लोग स्वयं भी शुक्पा के पौधे उगाने में सक्षम होंगे और बिना किसी बाह्य सहायता के स्वयं भी शुक्पा के पौधे अपने आस-पड़ोस में लगा पाएंगे । एडीसी काजा ने जूनिपर एवं औषधीय पौधों पर किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम करवाने के लिए संस्थान की सराहना की और आशा जताई कि इससे लोग लाभान्वित होगे । उन्होंने लोगो से जूनिपर के पेड़ों को कृषि वानिकी में शामिल करने की सलाह दी । एसडीएम काजा ने कहा कि जूनिपर की नर्सरी विकसित कर संस्थान ने बहुत अच्छा कार्य किया है और इसके पौधरोपण से शीत मरुस्थल की पारिस्थितिकी सुदृढ़ होगी । उन्होंने आगे कहा कि संस्थान भविष्य में भी क्षेत्र के लोगो को प्रशिक्षण देते रहे । स्थानीय प्रशासन से जो भी सहायता अपेक्षित होगी, प्रशासन संस्थान को सहायता देगा ।

। तकनीकी सत्र में सर्वप्रथम डॉ. शर्मा ने मृदा अपरदन के बारे में प्रतिभागियों को जानकारी दी और भूमि कटाव रोकने के उपाय सुझाए और उन पर अमल करने को कहा । उन्होंने शुक्पा की नर्सरी एवं पौधारोपण विषय के बारे में प्रतिभागियों को बताया । डॉ. जगदीश सिंह, प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग ने प्रतिभागियों को संस्थान की गतिविधियों के विषय में बताया और ऊंचाई क्षेत्र के समशीतोष्ण पौधों जैसे कि करू, बनककड़ी, रतनजोत, वन अजवाइन, जंगली लहसुन, इत्यादि की कृषि तकनीक के बारे में जानकारी दी । डॉ. पवन कुमार, वैज्ञानिक-ई ने शीत मरुस्थल के नुकसानदायक कीटों के संयुक्त प्रबंधन विषय पर जानकारी दी । डॉ. बालकृष्ण तिवारी वैज्ञानिक-बी ने उत्पादन वृद्धि हेतु पौधों के वृक्ष सुधार प्रोग्राम्स के बारे में बताया । डॉ. रणजीत कुमार, वैज्ञानिक -ई ने शुष्क मरुस्थल की वानस्पतिक विविधता के बारे में लोगों को जागरूक किया । व्याख्यान के पश्चात, विशेषज्ञों एवं प्रतिभागियों के बीच विस्तृत चर्चा हुई और उनके सभी प्रश्नों के उत्तर विशेषज्ञों ने दिये । प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की सरहाना की और संस्थान के निदेशक एवं सभी विशेषज्ञों का जूनीपर की नर्सरी तकनीक एवं औषधियों पौधों की खेती पर महत्वपूर्ण जानकारी सांझा करने के लिए शुक्रिया अदा किया । कार्यक्रम में स्थानीय किसानो एवम वन विभाग के फ्रंटलाइन स्टाफ के कर्मचारियों सहित 40 लोगों ने भाग लिया । कार्यक्रम का समापन डॉ. जगदीश सिंह, प्रभागाध्यक्ष, विस्तार के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ ।

Glimpses of Training Programme

NURSERY AND PLANTATION
TECHNIQUE
OF
JUNIPERUS POLYCARPOS C. KOCH

Media Coverage

औषधीय पौधों के बताए लाभ

औषधीय पौधों की खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला करवाई

जिला संवाददाता-काजा

जुनिपर शुक्पा की नर्सरी तकनीक एवं सम शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला करवाई गई। इसमें बतौर के महानिदेशक एएस रावत मुख्यतिथि संस्थान उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि जुनिपर शुक्पा पौधे के औषधीय कीमत बहुत है। कई हिमालय के राज्यों में यह पौधा काफी विकसित हो रहा हैं। इससे जहां पर्यावरण भी सुरक्षित होता है वहीं लोगों को आय के साधन भी विकसित होती है। जुनिपर-पेंसिल सिडार उत्तर-पश्चिम हिमालयी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शंकुधारी वृक्ष है। भारत वर्ष में यह वृक्ष मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर, लाहुल, स्पीति जिले में और जम्मू-कश्मीर के गुरेज घाटी, लद्दाख क्षेत्र, उत्तराखंड के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है । वहां की स्थानीय भाषा में इसे शूर, शुक्पा, शुर्गु, लाशुक एवं धूप नाम से जाना जाता है। विशिष्ठ अतिथि एडीसी राहुल जैन ने कहा कि स्पीति में इस पौधे से कई लोगों को फायदा हो सकता है। घर में ही लोगों को आय होगी और यहां की आर्थिकी मजबूत होंगी। निदेशक संस्थान के निदेशक डा. संदीप शर्मा ने बताया कि तावो में जूनिपर की नर्सरी एवं पौधरोपण तकनीक विकसित करने में सफलता पाई है और कहा कि पहले इसकी नर्सरी और पौधरोपण नहीं थे। जिससे कारण वन विभाग पौधरोपण के लिए इसके पौधे तैयार नहीं कर पा रहा था, परंतु संस्थान द्वारा विकसित नर्सरी तकनीक से इसके पौधरोपण के द्वार खुल गए हैं।

जुनिपर पौधे से आर्थिकी स्थिति होगी मजबूत

केलांग/रोहतांग (लाहौल-स्पीति)। औषधीय पौधा जुनिपर (शुक्पा) हिमालय क्षेत्रों में विकसित हो रहा है। इसके दाम अच्छे मिलते हैं। यह लोगों की आर्थिकी को मजबूत करेगा।

यह बात भारतीय वानिकी अनुसंधान के महानिदेशक एएस रावत ने मंगलवार को कही। शीत मरुस्थल काजा में भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान से जुनिपर की नर्सरी, तकनीक एवं महत्वपूर्ण सम शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की।

इसमें बतौर मुख्यातिथि संस्थान के महानिदेशक एएस रावत ने शिरकत की।उन्होंने कहा कि जुनिपर उत्तर-पश्चिम हिमालयी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शंकुधारी वृक्ष है। भारत में यह वृक्ष मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के जिला किन्नौर एवं लाहौल-स्पीति, जम्मू-कश्मीर की गुरेज घाटी, लद्दाख तथा उत्तराखंड के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। एडीसी राहुल जैन ने कहा कि स्पीति में इस पौधे से कई लोगों को फायदा हो सकता है। घरद्वार पर ही लोगों को आय का साधन मिलेगा। संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने कहा कि तावो में जुनिपर की नर्सरी एवं पौधरोपण तकनीक विकसित करने में सफलता पाई है। संवाद

Manali Halchal
2 d ·
Follow

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा "जूनिपर (शुक्पा) की नर्सरी तकनीक एवं समशीतोष्ण ऊंचाई क्षेत...
See more

Most relev

Rakesh Sharma
Great work done by H F R I congelation
2 d

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा "जूनिपर (शुक्पा) की नर्सरी तकनीक एवं समशीतोष्ण ऊंचाई क्षेत्र वाले समशीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती" विषय पर...

हिमालय राज्यों में आय के साधन विकसित कर रहा जुनिपर शुक्पा, औषधीय गुण भी हैं मौजूद

Divya Himachal TV
155K subscribers
Subscribe
0
Share
Save

काजा में औषधीय पौधों की खेती पर कार्यशाला

काजा में आयोजित कार्यशाला के दौरान उपस्थित लोग।

हिमाचल दस्तक ब्यूरो ■ काजा

■ भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने किया आयोजन

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के संयुक्त तत्वावधान से काजा में जुनिपर शुक्पा की नर्सरी तकनीक एवं महत्वपूर्ण सम शीतोष्ण औषधीय पौधों की खेती पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इसमें बतौर मुख्यअतिथि संस्थान के महानिदेशक एएस रावत रहे।

उन्होंने कहा कि जुनिपर शुक्पा पौधे के औषधीय कीमत बहुत है। कई हिमालय के राज्यों में यह पौधा काफी विकसित हो रहा हैं। इससे जहां पर्यावरण भी सुरक्षित होता है वहीं लोगों की आय के साधन भी विकसित होते है। जुनिपर (पेंसिल सिडार) उत्तर-पश्चिम हिमालयी क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण शंकुधारी वृक्ष है। भारत वर्ष में यह वृक्ष मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश के किन्नौर एवं लाहौल और स्पीति जिले में और जम्मू-कश्मीर के गुरेज घाटी और लद्दाख क्षेत्र तथा उत्तराखंड के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। वहां की स्थानीय भाषा में इसे शूर, शुक्पा, शुर्गु, लाशूक एवं धूप नाम से जाना जाता है। एडीसी राहुल जैन ने कहा कि स्पीति में इस पौधे से कई लोगों को फायदा हो सकता है। संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप शर्मा ने बताया कि ताबो में जूनिपर की नर्सरी एवं पौधरोपण तकनीक विकसित करने में सफलता पाई है।

*****